



दिल दा मामला है

“अरे चूत की झिल्ली फ़ट गई है, गाण्ड नहीं फ़टी है, बस अब नहीं, उतरो मेरे ऊपर से !” उसे भी लण्ड में दर्द हो रहा था और मुझे भी चूत में दर्द हो रहा था।

”

...

Story By: divya decosta (divyadecosta)

Posted: Tuesday, November 14th, 2006

Categories: पहली बार चुदाई

Online version: दिल दा मामला है

दिल दा मामला है

स्वीटी भाटिया ने पन्जाब से मुझे अपनी पहली चुदाई की वास्तविक कहानी भेजी है। उसे मैं अपने शब्दों में ढाल कर आपको पेश कर रही हूँ।

मैंने सीनियर सेकन्डरी परीक्षा 74 प्रतिशत अंकों से पास कर ली थी, अब कॉलेज में फ़र्स्ट ईयर साइन्स में प्रवेश ले लिया था। मेरा एडमिशन घर से बाहर जहाँ मैं चाहती थी, पन्जिम, गोआ में मिला था। मैंने वहाँ एक किराये का कमरा ले लिया। पापा ने एक काम वाली लगा दी और वापस भटिंडा चले गये।

मेरे मकान मालिक का लड़का माइकल था जो मुझ पर शुरु से ही लाईन मारता था। मुझे भी वो अच्छा लगता था, पर वो अधिकतर अपने धन्धे ही लगा रहता था। कभी कभी लाईन मारने के इरादे से वो दुकान पर जाने के पहले मुझे मिलने आता था। पर मेरा मन उससे बहुत जल्दी उचट गया था, क्योंकि वह ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं था, बारहवीं के बाद वो अपने घरेलू बिजनेस में लग गया था।

मैं यहाँ बहुत ही खुश थी, बचपन से मैंने गोआ की सुन्दरता का नाम सुना था और अब मैं अपने मनपसन्द की जगह पर आ चुकी थी। अब तक तो मैं गर्ल्स स्कूल में थी, पर यहाँ को-एजुकेशन है। कक्षा में हम 8 लड़कियाँ थी। पंजाबी होने से उनमें सबसे सुन्दर, लम्बी हूँ और अच्छा फ़िगर मेरा ही है।

कुछ ही दिनों में लड़के मुझ पर लाईन मारने लगे थे। मेरे सुन्दर होने से ये मेरी इच्छा थी कि मैं सबसे अच्छा ही चुनूँ। एक लड़का जिसका नाम मैंने बदल कर सन्दीप रखा है, मुझे बहुत प्यारा लगता था। वो मेरे अनुसार ही लम्बा था, हंसमुख था, जिस्म से बलशाली लगता था, मैं उसे रितिक रोशन कहती थी।

मेरे बोबे छोटे थे, पर ब्रा पहनने पर गोल गोल और भले लगते थे। मेरा दुबला पतला और लम्बा बदन, चूतड़ों के उभार, उनकी गोलाइयाँ सामान्य थी। जब कभी सन्दीप मुझसे बात करता था तो मैं उसे बातों में उलझा लेती थी और देर तक बातें करती थी। सन्दीप अन्दर ही अन्दर दिल में मुझे चाहता था। फ्री पीरियड में हम दोनों अक्सर केन्टीन में आ जाते थे। सन्दीप भी मेरी ही तरह 19 वर्ष का था।

एक बार...

“स्वीटी, तुम्हारा कोई दोस्त है लड़कों में ?” सन्दीप ने पूछा।

“नहीं अब तक तो नहीं, मैं तो गर्ल्स स्कूल में थी, बस लड़कियाँ ही मेरी दोस्त रही हैं !”

“मुझसे दोस्ती करोगी ?”

“तुम्हारी तो कई लड़कियाँ दोस्त हैं, कितनी से तो तुम बातें करते हो !”

“नहीं मुझे तो बस तुम अच्छी लगती हो।” कहते ही वो झंप गया, “सॉरी स्वीटी... मेरा मतलब था कि...”

मेरी आंखें झुक गईं। मैं शरमा गई, सन्दीप ने यह क्या कह दिया। दिल धड़क उठा।

“स्वीटी, मेरा मतलब यह नहीं था... मैं तो दोस्ती की बात कर रहा था !” सन्दीप हड़बड़ा गया। मैंने अपना चेहरा दोनों हाथों से छिपा लिया। मेरा चेहरा लाल हो उठा। किसी के दिल की बात सामने आ रही थी। मैंने साहस जुटाया और मन की बात कह डाली।

“सन्दीप, मैं तो तुम्हारी ही दोस्त हूँ, मुझे तुम भी बहुत अच्छे लगते हो !” लड़खड़ाती जुबान से मैंने कह ही डाला। मैंने चेहरे से हाथ हटाते हुए कहा, मेरी आंखें शर्म से लाल हो गई थी। उसे मैंने एकटक निहारते हुए कहा, “सच कहूँ सन्दीप, क्लास में तुम जैसा कोई नहीं !”

“नहीं स्वीटी, तुम सा कोई नहीं है, तुम मुझे परी जैसी सुन्दर लगती हो !”

“तुम मुझे, जानते हो, रितिक रोशन फ़िल्म स्टार जैसे लगते हो !”

जाने समय कैसे निकल गया। अगला पीरियड आ गया, हम दोनों उठे और क्लास की ओर जाने लगे, "सुनो स्वीटी, आज क्लास छोड़ो, चलो कहीं चलते हैं !"

मैंने उसकी ओर देखा, पर वहाँ सिर्फ़ प्यार था, मैं मना नहीं कर सकी, मैं उसका साथ अधिक से अधिक देर तक चाहती थी। उसने अपनी मोटर साईकल उठाई और मीरा-मार बीच की तरफ़ चल दिये। दिन का समय था, बीच खाली था, इक्के दुक्के लोग यहाँ वहाँ दिखाई दे रहे थे। पेड़ों की छांव में पार्क के पास कई जोड़े वहाँ पहले से ही जमे थे। यह यहाँ का आम दृश्य था।

हमने भी एक कोना पकड़ लिया और सीमेंट की बेंच पर बैठ गये। हमारे पास वाला जोड़ा चुम्बन में मग्न था, शायद वो लड़की के स्तनों से भी खेल रहा था।

सन्दीप ने मुझे इशारे से बताया, "वो देखो, कितना प्यार करते हैं एक दूसरे को !" मैंने भी उसे प्यासी नजरो से देखा।

सन्दीप समझ चुका था, प्यार की कोई भाषा नहीं होती। हमारे चेहरे नजदीक आने लगे, आंखें स्वतः ही एक दूसरे में खो गई। दोनों की आंखों में भरपूर प्यार था। मेरी आंखें बंद होने लगी। सन्दीप के होंठ मेरे गालों को चूमने लगे। मेरा जिस्म कंपकपाने लगा। होंठ कांपने लगे।

मैं एक असहाय सी लता की तरह उसकी बाहों में झूल गई। मेरे कांपते होंठों को उसके होंठों ने दबा लिया। दिल धड़क उठा, उसकी जीभ मेरे मुख में प्रवेश कर गई। मेरे वक्षस्थल पर उसके हाथों का दबाव आ गया। मैं अपना होश खो बैठी। मेरे होंठ ने भी अब उसकी जीभ को दबा लिया। अचानक हमारी तन्द्रा भंग हुई। हमारे सामने दो अंग्रेज महिलायें खड़ी थी, "एक्स्क्यूज मी, में आइ हेव योअर स्नेप्स ?"

"वाई नोट, थेन्क्स" मैंने उन्हें लिपटे हुए ही कहा।

“नाउ प्लीज, किस अगेन !” उन्होंने वही सेक्सी पोज बनाने को कहा। हम दोनों फिर से उसी तरह से लिपट पड़े और चूमने लगे और सन्दीप मेरे स्तन दबाने लगा। मैं फिर से खोने लगी।

“ओके प्लीज, बी नोर्मल नाउ...जस्ट सी इट” वो मेरे पास बैठ गई, और वीडियो चला कर दिखाया।

“हाय राम, अपन ऐसे कर रहे थे क्या, और तुम इतने बेशर्म हो, देखो ये क्या कर रहे हो...प्लीज मेम, ट्रान्स्फ़र इट टू माय मोबाईल ऑलसो !”

“ओके, नो प्रोबलम” उन्होंने मेरे मोबाईल में उसे कॉपी करके डाल दिया।

“ओके, प्लीज कन्टीन्यू... सॉरी फ़ोर डिस्टरबेन्स, एन्जोय लव !” कह कर वो दोनों आगे चली गई। अब मुझे शरम आने लगी थी कि मैंने ये क्या कर दिया। सन्दीप ने एक बार फिर से मुझे पास में खींच लिया। सामने वाला जोड़ा पर सेक्स एन्जोय कर रहा था। लड़की पैन्ट के ऊपर से ही लड़के का लण्ड दबा रही थी, और लड़का उसकी शर्ट में हाथ डाल कर चूचियाँ मसल रहा था। सन्दीप ने भी लिपटाये हुए मेरी चूत दबा दी। मैं उछल पड़ी।

“सन्दीप, ये नहीं करो, मुझे अच्छा नहीं लगता है !”

“सॉरी, स्वीटी, मुझसे रहा नहीं गया था, ये देखो तो, इसका क्या हाल है !” उसने अपने लण्ड की तरफ़ इशारा किया। मैंने मौका पा कर तुरन्त ही उसका लण्ड पकड़ लिया और मसलते हुए अन्दर दबा दिया।

“इसे कन्ट्रोल में रखो, समझे !” पर उसके लण्ड का साईज़ और मोटापन का स्पर्श पा कर मेरा जिस्म कांप गया। सन्दीप के मुख से आह निकल गई। मैं खड़ी हो गई। सामने वाले जोड़े की नजर जैसे हम पर पड़ी वो अलग हो गये। मैं मुस्करा उठी और उनके पास आ

गई।

“हाय, मजा आ रहा है ना ?” लड़की शरमा गई, मुझे भी बहुत मजा आया, कल भी आप आयेंगे ना...हम भी आयेंगे” लड़का और लड़की दोनों मुस्करा उठे।

“आपने तो खूब मजे किये ना, हमने सब देखा, आप का जोड़ा मस्त है, थक्स फ्रेंड्स”

रात को कमरे में अकेले लेटे लेटे मुझे बार बार सन्दीप का चुम्बन, वक्ष मर्दन और चूत को दबाना याद आने लगा था। उसके लण्ड का स्पर्श मेरी जान ले रहा था। मैंने मोबाइल पर वीडियो निकाल कर देखा। मेरी चूत में पानी उतर आया। मुझसे रहा नहीं गया तो मैंने मोबाइल पर उसे कॉल किया।

“सन्दीप, क्या कर रहे हो ?”

“पढ़ रहा हूँ और क्या ?”

“मेरे पास आ जाओ, तुम्हारी बहुत याद आ रही है !”

“अभी आऊँ क्या, कोई क्या कहेगा कि रात को आठ बजे तुम्हारे पास लड़के आते हैं !”

“आ जाओ ना, अभी यहाँ कोई नहीं है, पास के घर में अंधेरा है।”

“अच्छा अभी आता हूँ” उसने फोन रख दिया। मैं उसका बेसब्री से इन्तज़ार करने लगी।

कुछ ही देर में सन्दीप आ पहुंचा। मैं उसका दरवाजे पर ही इन्तज़ार कर रही थी।

आते ही उसने पूछा, “क्या हुआ, सब ठीक तो है न ?”

“नहीं कुछ भी ठीक नहीं है।”

“क्या हो गया, ऐसे क्यों बोल रही हो ?”

“अन्दर तो आ जाओ पहले, फिर बताती हूँ।”

अन्दर आते ही मैंने दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया और चैन की सांस ली। उसके आते ही मेरी बैचेनी दूर हो गई और मैं जो कहने वाली थी, सब भूल गई।

“कुछ तो कहो अब...”

“बस तुम आ गये, मैं सब भूल गई।” मैंने शरमा कर अपनी बात कबूल कर ली।

“स्वीटी तुम भी ना, बस” कह कर वो बिस्तर पर बैठ गया। “अच्छा अब मेरे पास तो आ जाओ ना”

“बोलो अब, लो आ गई।” मुझे पता था वो मुझे चूमेगा, छूएगा और मस्ती करेगा।

“तुमने मुझे यहाँ बुलाया, और अब चुप हो, कही तुम्हारा मन डोल तो नहीं रहा है ना?” सन्दीप ने मेरा हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींच लिया। मैं फिर शरमा गई।

उसने मुझे अपनी गोदी में बैठा लिया और धीरे से कमर में हाथ डाल दिया। मेरा चेहरा उसके चेहरे के बिल्कुल पास आ गया। मेरे होंठ कांप उठे। मेरे होंठ खुल गये और नीचे का लब उसके दोनो होंठ के बीच में दब गया। मेर निचला होंठ वो चूसने लगा। उसका एक हाथ मेरे वक्षस्थल पर आ गया। मेरे छोटे छोटे उरोज उसके हाथों में दब गये। मेरे मुख से सिसकारी निकल पड़ी।

“स्वीटी, तुमने ब्रा नहीं पहनी” सन्दीप का हाथ मेरे नंगे उरोज पर फिसल रहा था। मैंने उसके लबों को दबा कर चुप कर दिया। उसके लण्ड में उफ़ान आ रहा था। मेरा हाथ धीरे से उस पर आ गया और उसके लण्ड के साइज़ का नाप तौल करने लगा।

“सॉरी, स्वीटी, तुम्हारा रूप मुझसे सहा नहीं जा रहा है, ये गरम हो गया है।” मैंने फिर से उसके होंठ पर अंगुली रख दी।

“सन्दीप, तुम बहुत बोलते हो, चुप रहो, जो होना है वो तो होगा ही।” मेर बदन अब

वासना से भर चुका था। कुंवारी कली खिलने को बेताब थी। भंवरा भी डंक मारने को बेताब था। उसने अब धीरे से मेरी चूत की तरफ हाथ बढ़ाया तो मैंने अपनी टांगें चौड़ी कर ली। उसका हाथ अब मेरी चूत पर था।

“तुमने पेन्टी भी नहीं पहनी है।”

“अंहूहूह, सन्दीप, मत बोलो ना, समझते हो तो कहते क्यों हो ?” मैंने उसे नाराजगी जताई। मैं अब सन्दीप के हाथों में खिलोने कि तरह खेल रही थी। मेरे अंग अंग को वो फ्री स्टार्टल से दबा रहा था। मुझे बहुत मजा आ रहा था।

“सन्दीप, अपनी जीन्स तो ढीली करो ना, इसको कब तक छुपाओगे?”

“चल हट, ये बिगड़ गया तो फिर तुम नाराज नहीं होना।” सन्दीप ने शरारत से कहा। अपनी जीन्स उसने जल्दी से उतार दी।

“और ये अंडरवियर भी उतार दूँ क्या ?” उसने मेरे जवाब का इन्तज़ार नहीं किया और पूरा नंगा हो गया। मैं उसका जिस्म देखती रह गई। चिकना, सुन्दर, तराशा हुआ, गोरा, कोई बाल नहीं... हाय मेरे तो पसीना छूटने लगा। उसे देख कर मेरे बदन में वासना की आग भड़क उठी। मैंने भी अपने रहे सहे कपड़े उतार फेंके और नंगी हो गई। मैं उससे जा कर लिपट गई, दोनों जिस्म आपस में रगड़ उठे। नंगे जिस्म आपस में चिपक गये, नंगेपन का अहसास होने लगा। मैंने सन्दीप का लण्ड हाथ में पकड़ लिया...

“हाय रे सन्दीप, इतना मोटा लण्ड, इतना बड़ा लण्ड, इसे मेरे जिस्म में समा दो अब।” मैं नशे में बहक उठी। उसके हाथ मेरी चूतड़ो की गोलाईयां मसल रहे थे। मैं उसके लण्ड को अपनी चूत से रगड़ रही थी। उसका सुपाड़ा अब भी चमड़ी से ढका था। मेरे चूत का रस उसके लण्ड को गीला कर के तर कर रहा था।

सन्दीप मुझे दबा कर बिस्तर पर लेट गया और मेरे ऊपर चढ़ गया। मेरे शरीर में मीठी मीठी वासनायुक्त जलन भरने लगी थी। चूत फ़ड़फ़ड़ा उठी थी। उसने अपने लण्ड का पूरा जोर मेरी चूत पर लगा दिया। पर वो इधर उधर फ़िसल जाता था। मेरे से रहा नहीं गया तो मैंने लण्ड पकड़ कर चूत में घुसा डाला। लण्ड घुसते ही उसके मुँह से चीख निकल गई। लण्ड कच्चा था, पहली बार चूत का स्वाद चखा था। उसके सुपाड़े के रिन्ग की झिल्ली फ़ट गई थी।

“क्या हुआ सन्दीप, डर गये क्या मेरी चूत से” मैं उसकी चीख को समझ नहीं पाई थी।

“चुप हो जाओ, मुझे लगती है, ये क्या हो गया है ?

“कुछ नहीं, लगाओ ना, घुसेड़ो ना लण्ड अन्दर तक, प्लीज !” उसने मेरी बेकरारी देखी और सम्भल कर उसने थोड़ा सा बाहर निकल कर हिम्मत करके पूरा जोर लगा कर लण्ड धक्का मार कर पूरा घुसेड़ दिया। इस बार उसके साथ मेरी भी चीख निकल गई। सन्दीप रुक गया।

“अब तुम्हें क्या हुआ ?” चूत में से खून निकल पड़ा। पर उसकी नजर मेरे चेहरे पर थी, जहाँ से आंसू बह निकले थे।

“रो क्यों रही है, लगी तो मुझे है, तुम क्यों रो रही हो ?”

“मेरी फ़ट गई है, हाय रे !” मैं रो पड़ी। मुझे पता था कि झिल्ली होती है, पर फ़टती कैसे है यह आज पता चला।

“पर मैंने गाण्ड थोड़ी मारी है, जो तुम्हारी फ़ट गई है ?” सन्दीप ने हैरानी से कहा।

“अरे चूत की झिल्ली फ़ट गई है, गाण्ड नहीं फ़टी है, बस अब नहीं, उतरो मेरे ऊपर से !” उसे भी लण्ड में दर्द हो रहा था और मुझे भी चूत में दर्द हो रहा था।

उसने लण्ड चूत से बाहर निकाला तो खून भी निकल पड़ा। मैंने झट से पास में पड़ा कपड़ा उठाया और नीचे लगा दिया। खून देख कर सन्दीप घबरा गया। मैंने उसे अपनी जानकारी के अनुसार उसे बताया तो वो शान्त हुआ।

अब हमारे में चुदाई का जोश समाप्त हो गया था। हम दोनों ने बाथ रूम में जा कर सफ़ाई की। उसका लण्ड देखा तो सुपाड़े के रिंग से लगी स्किन अलग हो गई थी और थोड़ी सी लालिमा आ गई थी। मैंने भी सेनेटरी नेपकिन लगा लिया था।

“सन्दीप हमें कितना मजा आ रहा था, पर ये अब क्या है... मुझे तो डर लग गया है।”
“लगता है हमें सजा मिली है...” वो जाने के लिये तैयार था।

हम दोनों का कुंवारापन जाता रहा था, अब हम दोनों मर्द और औरत बन चुके थे। जो अब चुदाई के लिये तैयार थे। सन्दीप जा चुका था। मैं बिस्तर पर लेट गई। अपना दर्द किससे कहती। चूत में अब भी टीस उठ रही थी। रात देर तक जागती रही थी, फिर कब आंख लग गई पता ही नहीं चला। दूसरे दिन मेरे चूत का दर्द समाप्त हो चुका था। मुझमें फिर से वासना अंगड़ाईयां लेने लगी थी।

आज सवेरे सन्दीप का कोई फोन नहीं आया। मैंने किया तो फोन ओफ़ था। कॉलेज में भी वो नहीं दिखा। मैं परेशान हो उठी। शाम को माइकल घर आया और मुझे परेशान देख कर पूछा, तो मैंने उसे बताया कि सन्दीप मुझसे बात नहीं कर रहा है। उसने मुझे तसल्ली दी कि शायद वो यहाँ नहीं होगा, आ जायेगा, इन्तज़ार करो।

माइकल अब रोज मेरा दिल बहलाने लगा। मजाक करता, मुझे हंसाता, सेक्सी जोक्स करता। मैं धीरे धीरे माइकल की तरफ़ आकर्षित होने लगी। सन्दीप का ख्याल दिल में आता पर माइकल अपनी जिन्दादिली से उसे भुला देता था।

एक शाम को मैं अपना संयम तोड़ बैठी और माइकल से चुद गई। मैं कॉलेज से आने के बाद बिस्तर पर लेटी माइकल और सन्दीप के बारे में सोच रही थी। अचानक मुझे माइकल सेक्सी लगने लगा। उसके नंगे जिस्म की मैं कल्पना करने लगी। उससे चुदने का अनुभव महसूस करने लगी। मुझे माइकल की हर बात अब अच्छी लगने लगी। उसकी हंसी, उसकी बातें, उसका स्टाईल इत्यादि। मेरे मन में वासना करवटे लेने लगी। मुझे लगा कि अब माइकल से ही मैं सन्तुष्ट हो पाऊंगी।

माइकल हमेशा की तरह शाम को आया और एक आइस्क्रीम जो मुझे पसन्द थी, मुझे दी, ये उसका हमेशा का काम था। पर मेरी नजरें बदल चुकी थी। आते ही उसने एक सेक्सी मजाक किया जो मुझे अच्छा लगा। उसकी हर बात में मुझे सेक्स नजर आने लगा। आइस्क्रीम खाते खाते पिघल कर मेरी छाती पर गिर पड़ी।

“हाय माइकल, मेरा कुर्ता गंदा हो गया !” माइकल ने तुरन्त एक कपड़ा गीला किया और मेरी छाती पर लगा कर धीरे से घिस दिया। दाग तो मिट गया पर मेरी चूची जो दब गई थी, उसने मन में आग लगा दी। जोर की गुदगुदी उठी और मेरे मुख से आह निकल पड़ी।

“मजा आया ना ?” उसने तुरन्त मजाक किया।

“तुझे तो मारना चाहिये, साला गड़बड़ी करता है।” मैंने यूँ ही नाराजगी जताई।

“देख मारना ही है तो पूरा मारना, पूरा दाग साफ़ कर दूँ क्या ?” उसने फिर से मजाक किया।

“माइकल, एक तो दबा दिया और अब मजाक कर रहा है !”

” ऐ स्वीटी, दबाने दे ना, तेरा क्या जायेगा, बस चमड़ी ही तो दबेगी, मुझे मजा आ जायेगा।”

“अब देख माइकल, पिटेगा तू !”

“अच्छा पिटना ही है तो दबा कर ही पिटूँ !” फिर उसने शरारत कर ही दी।

माइकल ने आगे बढ़ कर मेरे बोबे दबा दिये, मैं वासना की मारी, क्या कहती उसे, मेरी दिली इच्छा भी यही थी। मैंने उसका हाथ दूर करने की असफल चेष्टा की, फिर मन किया कि मजा आ रहा है तो उसे करने दिया।

“छोटे हैं, पर कड़े हैं, स्वीटी हाय रे, देख तेरा कुछ नहीं बिगड़ा ना, मजा आया ना ?” मेरी सांसें तेज हो गई।

“हाय, ना कर अब, वर्ना सब गड़बड़ हो जायेगा रे !” मेरी धड़कनें तेज हो गई। माइकल शायद यह जानता था कि वो शुरू कर देगा तो मैं मना नहीं करूंगी।

“फिर भी तेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा, ये तो सिर्फ चमड़ी का खेल है, बस हमें रगड़ना ही तो है।”

“माइकल, तू बड़ा खराब है, जिस्म को चमड़ी कह रहा है, ला तेरी नीचे की चमड़ी को मसल दूँ” मैंने उसका वार उसी पर किया। उसका लण्ड जोर मार रहा था। मैंने उसके जवाब का इन्तज़ार नहीं किया और उसका लण्ड पैन्ट के ऊपर से ही भींच लिया। उसके मुँह से आह निकल गई। उसने मुझे लिपटा कर चूमना शुरू कर दिया। उसके हाथ मेरे स्कर्ट के अन्दर घुस गए। मेरा नंगा बदन उसके कब्जे में आ गया, मेरे निपल को हौले से मसलने लगा।

“हाय माइकल बस कर अब, वर्ना सब गड़बड़ हो जायेगा।” मेर जिस्म पिघलने लगा। मन में खुशी की तरन्गों उछाल मारने लगी।

“सच मान यार तेरी चमड़ी को कुछ नहीं होगा, देखना वैसी की वैसी रहेगी।” मुझे वासना के साथ ये हंसी का खेल बहुत भा रहा था।

“माइकल, मत बोल ना, देख चमड़ी को छूने से मस्ती आ रही है।” मुझे हंसी भी आ रही थी और मस्ती का रन्ग भी चढ़ रहा था। लग रहा था कि वो बस मेरे अंग दबाता ही जाये।

“साली, मस्ती बढ़ती जा रही है, चल अपन चमड़ी की रगड़मपट्टी करें।”

“देख मुझे और ना हंसा !” मेरी हंसी रोके नहीं रुक रही थी। उसने मेरा स्कर्ट पूरा उतार दिया, मेरा ऊपर का शरीर नंगा हो गया।

“गोरी चमड़ी, चिकनी चमड़ी, क्या शेष है, यार तुम तो क्या फ़िगर वाली हो ?” मैं फिर से हंस पड़ी।

“लगता है तुम चमड़ी का पीछा नहीं छोड़ने वाले, अब अपनी चमड़ी तो दिखाओ, उतारो अपने कपड़े !”

उसको तो जैसे मौका चाहिये था। झट से पूरा नंगा हो गया और पहलवान का पोज बना कर खड़ा हो गया।

“ये देखो मेरी सोलिड बॉडी, हूँ न मच्छर पहलवान ?”

“हाय रे, माइकल तुम भी ना !” मैं खिलखिला कर हंस पड़ी, “अब बस करो मेरा पेट दुखने लगा है।”

“क्यूँ, पसन्द नहीं आई ये बॉडी ?”

“बस ऐसे ही खड़े रहो, तुम्हारा ये सब बहुत सुन्दर है।” उसका खड़ा हुआ तन्नाया लण्ड मुझे सुन्दर लगने लगा था। मैंने आगे बढ़ कर उसका लण्ड थाम लिया।

“नरम चमड़ी का कड़क लण्ड... माइकल देखो ना कितना मस्त है।”

“नरम चमड़ी का कड़क लण्ड... क्या बात है, अब तुम्हारी नरम चमड़ी की प्यारी चूत की बारी है।” माइकल ने मुझे हंसते हंसाते बिस्तर पर लेटा दिया। और उसका लण्ड मेरी चूत पर दब गया। मन किया, साला मुझे चोद दे, लण्ड घुसेड़ दे, क्यूँ देर कर रहा है।

“बोलो स्वीटी, जय हो ऊपर वाले की, बोलो ना !”

“अब बस करो ना, कितना हंसाओगे, अच्छा जय ऊपर वाले की...बस” और उसी समय उसका लण्ड मेरी चूत में उतरता चला गया। मेरी चूत भी ऊपर जोर लगा कर लण्ड को निगलने लगी। तेज मीठी सी मस्ती वाली गुदगुदी उठी।

मुझे हैरानी हुई कि मुझे बिलकुल दर्द नहीं हुआ, बल्कि मजा आया। मेरे दिल में ख्याल आया कि दर्द और मजा तो सब अपने अन्दर ही निहित है। कल दर्द था यहीं पर, आज स्वर्ग सी मिठास है, मुझे सन्दीप या माइकल की क्या जरूरत है, मजा तो अन्दर ही है। बस चुदने के सॉलिड लण्ड चाहिये और एक भरोसे का मर्द। अपनी मस्ती खुद ही लूटो और मन करे उससे चुदाओ, क्यूँ किसी की लौंडी बन कर रहो। उसके धक्के बढ़ते गये, मैं मस्त होने लगी।

“तो फूल तो खिल चुका है, किसी ने चोदा है या खेल खेल में खिल गई?” मैं उसका इशारा समझ रही थी, पर मुझे ये समझ में आ गया था कि मजा तो लण्ड में है माइकल में नहीं।

“मजा तो खिले फूल में है ना, भरपूर मजा मिलेगा ना।” उसका लण्ड चूत में पूरा समेटते हुये बोली।

“मजा आ रहा है ना चमड़ी रगड़ने में, ये सारा खेल ही इसका है डार्लिंग” उसने लण्ड पेलते हुए कहा। मेरी चूत पानी पानी हुई जा रही थी। मिठास चरम सीमा पर आ चुकी थी। मेरा बदन अब ऐंठने लगा था। मुझे लगा कि चूत पानी छोड़ने वाली है, चूत लपलपा उठी, सारी नसें खिंचने लगी। मैं होश खोने लगी। और अन्जाने में मेरी चूत कसने लगी और पानी छोड़ दिया।

“आहूह माइकल, मेरी तो निकल गई, हाय, पानी निकल रहा है।” मेरा शरीर कसने लगा और झड़ने लगा। धीरे धीरे स्वर्ग सा आनन्द लेते हुए मैं झड़ने के सुख का अहसास अनुभव करने लगी। मेरा पानी निकल रहा था। पर माइकल के धक्के बन्द नहीं हुए। मेरा पूरा पानी

निकलते ही उसने मुझे उल्टा लेटा दिया और और मेरे चूतड़ों की गोलाईयाँ हाथ से फ़ैला दी। और उसका लण्ड मेरी गाण्ड के छेद से टकरा गया। मुझे गुदगुदी सी लगी। पर अगले ही पल मैं चीख उठी। उसका लण्ड गाण्ड में घुस चुका था।

“माइकल बस, निकाल लो, मर जाऊंगी !”

“यार चमड़ी है, कुछ नहीं होगा, कुछ देर में फ़ैल जायेगी, शान्त रहो।”

उसका दूसरा धक्का मुझे फिर से हिला गया। मेरी गाण्ड में जलन होने लगी। पर वो रुका नहीं। मैंने कस कर अपना मुँह बन्द कर लिया, वो जोर लगा कर गाण्ड चोद रहा था। वैसे तो मेरी गाण्ड का छेद बहुत नरम था पर उसमे कोई लण्ड पहली बार घुसा था।

कुछ देर धक्के मारने के बाद उसके लण्ड ने माल छोड़ दिया और मेरी गाण्ड में ही पूरा वीर्य भर दिया। जलन में वीर्य ने मरहम का काम किया। थोड़ा चिकनापन गाण्ड में लगा। उसका लण्ड बाहर आ गया। वह तुरंत उठा और कराह उठा। उसका लण्ड गाण्ड मारने से जगह जगह से छिल गया था, चमड़ी फ़ट गई थी। मेरी गाण्ड में भी जलन हो रही थी।

हम दोनों ने बाथ रूम में पानी से सब साफ़ कर लिया। मुझे ज्यादा नहीं लगी थी, बस हल्की सी सूजन आ गई थी। माइकल ने मुझसे बोरोप्लस ले कर मेरी गाण्ड में लगा दी और अपने लण्ड में लगाने लगा।

“स्वीटी रुकना मैं अभी आया।” मैं बिस्तर पर लेट गई और आज की चुदाई के बारे में सोचने लगी। फिर मुझे हंसी भी आने लगी।

“क्यों हंसी तुम ?” माइकल रात का खाना ले आया और मेज़ पर लगाने लगा।

“हंसी क्यों ना आये, यार तुम्हारे इस चमड़ी के खेल में अपनी तो सारी चमड़ी फ़ट गई।” मैं खिलखिला कर हंसी।

“हा यार, मेरे तो लण्ड की माँ चुद गई।” मैंने उसके होंठों पर अंगुली रख दी।

“गाली नहीं, समझे...” हम फिर से हंस पड़े। वो मेरे टोकने से शरमा गया और साँरी कहा।

“सन्दीप के बारे में मैं कल पता करूंगा।” माईकल ने मुझे दिलासा दिया। पर अब सन्दीप किसे चाहिये था।

“रहने दो ना, अब तो तुम ही मुझे प्यारे लगने लगे हो।”

“नहीं, मुझे पता है, तुम्हें एक लण्ड और चाहिये... और शायद और भी ज्यादा...” माईकल कह कर हंस पड़ा। क्या इसे मेरे मन की बात मालूम हो गई है या ये ऐसे ही कह रहा है।

“अच्छा तुम्हें और चूत नहीं चाहिये क्या ? किसी को पटाऊँ क्या ?”

दोनों ने एक दूसरे को पहले तो गहरी नजरों से देखा, फिर ठहाको से कमरा गून्ज उठा। शायद हम जवानी का तकाजा समझ गये थे।

Other stories you may be interested in

मामा की बेटी की रस भरी चुदाई

दोस्तो, मेरा नाम परम है और मैं दिल्ली में रहता हूँ। मैं हमेशा से ही हिन्दी सेक्स स्टोरी पढ़ा करता था। आज मैं भी आपको अपने साथ हुई एक सच्ची घटना बताना चाहता हूँ। यह कहानी एकदम सच है। ये [...]

[Full Story >>>](#)

ममेरे भाई ने मेरी कुंवारी चूत की चुदाई की-2

मेरी चूत चुदाई की कहानी के पहले भाग ममेरे भाई के साथ मेरी कुंवारी चूत की चुदाई-1 में अब तक आपने पढ़ा कि मेरे ममेरे भाई अर्पित ने मेरे मामा मामी की गैरमौजूदगी में मुझे सेक्स के लिए पटा लिया [...]

[Full Story >>>](#)

ऑफिस की दोस्त की कुंवारी चूत का पहला भोग

दोस्तो, मैं जो कहानी आप लोगों को सुनाने जा रहा हूँ वह आपको जरूर पसंद आएगी। यह कहानी मेरी अपनी कहानी है। कहानी को शुरू करने से पहले मैं आपको अपने बारे में कुछ बताना चाहूंगा। मेरा नाम आदित्य है [...]

[Full Story >>>](#)

नयी पड़ोसन और उसकी कमसिन बेटियां-1

आगरा से ट्रांसफर होकर जब मैं कानपुर आया तो मैंने कानपुर में जो मकान किराये पर लिया। मेरे मकान के ठीक सामने गुप्ताइन का घर था। गुप्ताइन लगभग 45 साल की थी लेकिन अच्छी मेन्टेनेंस और सजी संवरी रहने के [...]

[Full Story >>>](#)

खूबसूरत भाभी की कुंवारी चूत मैंने चोद दी

मेरा नाम प्रिंस है और मैं मुंबई में रहता हूँ। मैं 20 साल का हूँ और मैं आप सभी को आज अपने पहले सेक्स अनुभव के बारे में बताना चाहता हूँ। कहानी शुरू करने से पहले मैं आप सभी को [...]

[Full Story >>>](#)

